श्री राम भगवानको प्राप्त करने के लिये सरल मार्ग हनुमानकी भक्ति

ऐसी ही तरह प्रज्ञावतार (पं. श्रीराम शर्मा आचार्यजी) की कृपा प्राप्त

करनेके पहले अंशावतार (सूर्यकेतु) पं. लीपापत शर्मा को भी जाने

गायत्री परिवार मिशनसे पूज्य पंडीतजीका प्रथम परिचय डबरा में ही द्वारिकाप्रसाद बड़ेरिया "चैतन्यजी" के द्वारा हुआ। डबरामें चैतन्यजी द्वारा आयोजित पांच कुंडी गायत्री यज्ञमें प्रथम बार पूज्य गुरुदेवका दर्शन व सुननेका सुवसर मिला तबसे रामके हनुमानकी तरह 'करिष्ये वचनं तवं' कह कर संर्पूण गुरुदेवको समर्पित कर कार्यान्वित बने। बादमें मिलके मेनेजरकी नौकरी छोडकर मथुरा गायत्री तपोभूमि में जीवनदानी बनकर रहकर गुरुदेवके ज्ञानकी सेवा करने लगे।'राम काज कीन्हे बिना मोहि कहां विश्राम' पंडीतजीका सूत्र ही नहीं मंत्र बन गया। वो सतत मिशनका का कार्य अध्यवसायसे निरंतर करते रहते थे व अन्यको जागृत व प्रेरणा देते रहते थे।

उनकी ग्लोबल गायत्री परिवार मिशन प्रति श्रध्धा, निष्ठा व समर्पण भावको देखकर पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्यजीने १९७१में मथुरा से विदाय लेकर हरिद्वार जानेके पहेले पंडितजीको मिशनका संगठनात्मक उत्तराधिकारी धोषित कर दिया और उन्हें अग्रज का स्थान देने के लिये सभीको निर्देशित किया। अर्थात् वंदनीया माताजीके बाद पंडीत लीलापतजी उत्तराधिकारी बने, उनके जानेके बाद ज्ञानयज्ञकी "लाल मशाल" को ही गुरु परंपरामें गुरु माना जाता है।

सन १९७१ के बाद पंडितजीने गायत्री तपोभूमि मथुरा का बहुत विस्तार किया। और मिशनका ज्ञानयज्ञ जो पूज्य गुरुदेवका मुख्य कार्य है इस पर सबसे ज्यादा कार्य किया ओर जन जन तक पूज्यवरका साहित्यका प्रकाशन कर वितरण किया।

उनका सबको अेक ही अनुरोघ व आग्रह रहा है कि यदि आपको वंदनीया माताजी व पूजनीय गुरुवर से प्यार है, तो मात्र जप, यज्ञ करनेसे मनोकामनाकी पूर्ति की आशा करना व्यर्थ है। आप सब यथा संभव ज्ञानयज्ञ के लिये समयदान दे व जीवन घन्य बनावे। पूज्य पंडीतजी कहा करते थे कि, "ज्ञान यज्ञ ही इस जीवनका सबसे उत्तम घर्म कृत्य ह" ।

जबतक यह घरा पर पूज्य गुरुदेव व वंदनीया माताजी पूजे जायेंगे तब तक भगवान रामके हनुमानकी तरह सदैव गुरुसत्ताके साथ वो सिर्फ याद ही न किया जायेगा मगर पूजे जायेंगे ।